डॉ. रामकुमार वर्मा

हिंदी एकांकी के जनक तथा ऐतिहासिक नाटकों द्वारा लोक-रुचि को अपनी ओर आकृष्ट करने वाले 'एकांकी सम्राट' डॉ. रामकुमार वर्मा का जन्म मध्य प्रदेश के सागर जिले में 15 सितम्बर, 1905 को हुआ था | उनकी प्रारंभिक शिक्षा मध्य प्रदेश के विभिन्न स्थानों में हुई | उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया | स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद वे वहीं हिंदी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए और विभागाध्यक्ष के पद पर पहुंचे |

नाटककार और कवि के साथ-साथ उन्होंने समीक्षक, अध्यापक तथा हिंदी साहित्येतिहास लेखक के रूप में भी हिंदी साहित्य सृजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | वे गर्व के साथ कहते थे, 'ऐतिहासिक एकांकियों में भारतीय संस्कृति का मेरुदंड-नैतिक मूल्यों में आस्था और विश्वास का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है |' उनके काव्य में रहस्यवाद और छायावाद की झलक है | नवीन खोजों के आधार पर तर्क की जटिल समस्याओं से सुलझकर जो सत्य आलोचना के माध्यम से उनपकी रचनाओं में कलमबद्ध हुआ है, वह अपने आप में महत्वपूर्ण है |

डॉ. रामकुमार वर्मा ने अपने इतिहास प्रसिद्ध नाटकों में राष्ट्रनायकों के चरित्रों के सहारे प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को जीवित करके दर्शकों तथा पाठकों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की भावना जगाने की कोशिश की है | उनके नाटकों के नायक प्राय: अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणों की बलि देने को सदा तैयार रहते हैं |

उनकी रचनाएं हैं -

एकांकी संग्रह	पृथ्वीराज की आंखें, रेशमी टाई, चारुमित्रा, विभूति, सप्तकिरण, रूपरंग, रजतरश्मि, ऋतुराज, दीपदान, रिमझिम, इन्द्रधनुष, पांचजन्य, कौमुदी महोत्सव, मयूर पंख, खट्टे-मीठे एकांकी, ललित एकांकी, कैलेण्डर का आखिरी पन्ना, जूही के फूल	
नाटक	विजय पर्व, कला और कृपाण, नाना फड़नवीस, सत्य का स्वप्न	
काव्य	चित्ररेखा, चन्द्रकिरण, अंजलि, अभिशाप, रूपराशि, संकेत, एकलव्य, वीर हम्मीर, निशीथ, नूरजहां, जौहर, आकाशगंगा, उत्तरायण, कृतिका	
आलोचना एवं साहित्येतिहास सम्पादन	कबीर का रहस्यवाद, इतिहास के स्वर, साहित्य समालोचना, साहित्यशास्त्र, अनुशीलन, समालोचना समुच्चय, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, | हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास |

उनका निधन वर्ष 1990 में हुआ |